Topics -10 चतुर्थी विभक्ति

चतुर्थी तदर्थार्थ - बलि - हित - सुख - रक्षितैः

चतुर्थ्यन्तार्थाय यत् तद्वाचिना, अर्थादिभिश्च चतुर्थ्यन्तं वा प्राग्वत् । यूपाय दारु यूपदारु । तदर्थेन प्रकृतिविकृतिभाव एवेष्टः, तेनेह न - रन्धनाय स्थाली ।

(वा०) अर्थेन नित्यसमासो विशेष्यलिङ्गता चेति वक्तव्यम् ।

द्विजार्थः सूपः । द्विजार्था यवागूः । द्विजार्थम् पयः । भूतबलिः । गोहितम् । गोसुखम् । गोरक्षितम् ।

चतुर्थ्यन्त सुबन्त का तदर्थवाचक, अर्थ, बलि, हित, सुख और रक्षित - इन छः प्रातिपदिकों के सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं । सभी के उदाहरण क्रमशः नीचे दिये जा रहे हैं

(1) तदर्थवाचक → यहाँ 'तद्' से चतुर्थ्यन्त सुबन्त का ग्रहण होता है और इस प्रकार तदर्थ का अर्थ होगा चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिए ।

चतुर्थ्यन्त सुबन्त के लिए जिसका उपयोग होता है, उसके वाचक प्रातिपदिक के सुबन्त के साथ उस चतुर्थ्यन्त सुबन्त का समास होता है। किन्तु चतुर्थ्यन्त सुबन्त और तदर्थवाचक सुबन्त में प्रकृति - विकृतिभाव होना चाहिए। तभी यह समास होगा। उदाहरण के लिए 'यूपाय दारु' (यज्ञ स्तम्भ के लिए लकड़ी) में सुबन्त 'दारु' का उपयोग चतुर्थ्यन्त 'यूपाय', के लिए होता है। 'दारु' (लकड़ी) यहाँ प्रकृति है और 'यूपाय' विकृति, क्योंकि यूप लकड़ी से बनता है। अतः प्रकृत सूत्र से समास हो 'यूपदारु' रूप बनता है। किन्तु यदि तदर्थवाचक सुबन्त से चतुर्थ्यन्त सुबन्त में कोई विकार न होगा, तो समास भी न होगा। उदाहरणार्थ 'रन्धनाय स्थाली (पकाने के लिए डेगची) में तदर्थवाचक सुबन्त 'स्थाली' तो है, किन्तु स्थाली से रन्धन न बनने के कारण प्रकृति - विकृतभाव के अभाव में समास नहीं होता।

Date
Page

(2) यहाँ 'द्विजाय अर्थः (द्विज के लिए) में समास हो 'द्विजार्थः' रूप बनता है।
(वा०) अर्थेन नित्य — अर्थ है। अर्थ सुबन्त के साथ नित्य समास होता है और समस्त पद का लिङ्ग विशेष्य के अनुसार होता है तीनों लिङ्गों के उदाहरण ये हैं—
(क) पुँल्लिङ्ग — द्विजार्थः सूपः (द्विज के लिए सूप)

(ख) स्त्रीलिङ्ग — द्विजार्था यवागूः (द्विज के लिए लप्सी)

(ग) नपुंसक लिङ्ग — द्विजार्थं पयः (द्विज के लिए दूध)

(3) बलि — इसका उदाहरण है — भूतबलिः। यहाँ 'भूतेभ्यो बलिः' (भूतों के लिए बलि) इस विग्रह में चतुर्थ्यन्त 'भूतेभ्यः' का सुबन्त 'बलि' के साथ समास हुआ है।

(4) हित — यहाँ गोभ्यो हितम्' इस विग्रह में चतुर्थ्यन्त 'गोभ्यः' का सुबन्त 'हितम्' के साथ समास

होकर 'गोहितम् (गो-हित) रूप बनता है।
सुरव - इसका उदाहरण है - 'गोसुरवम्'।
यहाँ 'गोभ्यः सुरवम्' (गौओं का सुरव)
इस विग्रह में चतुर्थ्यन्त 'गोभ्यः' का
'सुरवम्' के साथ समास हुआ है।
रक्षित - यहाँ 'गोभ्यो रक्षितम्'
गौओं के लिए रक्षित) - इस विग्रह
में चतुर्थ्यन्त गोभ्यः का सुबन्त
'रक्षितम् के साथ समास से गोरक्षितम्'
रूप बनता है।